|  |
| --- |
| 12. Oktober 2025 |
| **28. Sonntag im Jahreskreis C**  |
| Erste Lesung: 2 Kön 5,14-17; Zweite Lesung: 2 Tim 2,8-13; Evangelium: Lk 17,11-19  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 427, 1+2! | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
|  | GL 409 | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  | GL 393, 1-3 | Nun lobet Gott im hohen Thron |
|  | GL 711 | Aus den Dörfern und aus Städten |
|  | GL 143, 1+2! | Mein ganzes Herz |
|  | GL 272, 1+3 | Zeige uns, Herrm deine Allmacht  |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 157 | Herr, erbarme dich |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 701 | Lasst uns Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 98, 1-4 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 55, 1 | Jubelt, ihr Lande, dem Herrn |
|  | oder Psalmlied |  |
|  | GL 551, 1+2 | Nun singt ein neues Lied |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Dankt für alles;* |
|  | *denn das will Gott von euch, die ihr Christus Jesus gehört.* |
|  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 360, 1+2! | Macht weit die Pforten |
|  | GL 702 | Herr, was im Alten Bunde |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 703 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 800 | Herr, gib uns deinen Frieden |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 389, 1+2+5+6 | Dass du mich einstimmen lässt  |
|  | GL 382, 1+2+4 | Ein Danklied sei dem Herrn |
|  | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott |
|  | GL 409, 1+3+4 | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  | GL 712 | Singt dem Herrn alle Völker der Erde |
|  |  |  |
| Schluss: | Marienlied |  |